|b09291 52bednaF (English)

|c09291_000_52bedna.xml (Task 179156)

|v1

रविवार का दोपहर सत्र

|v2

जनरल सम्मेलन

|v3

रविवार का दोपहर सत्र

|v4

3 अक्टूबर 2010

|v5

पवित्र आत्मा प्राप्त करो

|v6

पवित्र आत्मा

|v7

बपतिस्मा

|v8

आज्ञाकारिता

|v9

प्रकटीकरण

|v10

पुनःस्थापना

|v11

जनरल सम्मेलन

|v12

पवित्र आत्मा प्राप्त करो

|v13

एल्डर डेविड ए. बेडनार द्वारा

|v14

बारह प्रेरितों की परिषद के

|v15

ये चार शब्द---''पवित्र आत्मा प्राप्त करो''--- कोई कर्महीन घोषणा नहीं है; अपितु, ये मिलकर एक पौरोहित्य आदेश बनाते हैं---कर्म करने के लिए ए क आधिकारिक चेतावनी और न कि किसी के प्रभाव से कर्म करना ।

|v16

मेरा संदेश हमारे प्रतिदिन के जीवन में पवित्र आत्मा प्राप्त करने की कोशिश के महत्व पर केन्द्रीत है । मैं हममें से प्रत्येक को निर्देश देने और ऊँचा उठ ने में प्रभु की आत्मा से प्रार्थना करता और इसे निमंत्रण देता हूं ।

|v17

पवित्र आत्मा का उपहार

|v18

दिसंबर 1839 में, जब जोसफ स्मिथ और एलाईस हिगबी, वाशिंगटन, डी.सी., में मसूरी के सन्तों के साथ हुए दुर्व्यवहार की शिकायत को दूर करने गए थे, उन्होंने हायरम स्मिथ को लिखाः ''राष्ट्रपति [संयुक्त राज्य के], के साथ हमारी मुलाकात में, उन्होंने हमसे पूछा था कि हमारे धर्म में और उस स मय के अन्य धर्मो में क्या भिन्नता थी । भाई जोसफ ने कहा हमारे बपतिस्मे के तरीके, और हाथों को रखकर पवित्र आत्मा के उपहार में भिन्नता है । हम मानते थे कि बाकी सभी विचार पवित्र आत्मा के उपहार में शामिल थे'' (*Teachings of Presidents of the Church: Joseph Smith* [2007], 97) ।

|v19

पवित्र आत्मा परमेश्वरत्व का तीसरा सदस्य है; उसका व्यक्तित्व आत्मा का है और सारी सच्चाई की गवाही देता है । धर्मशास्त्रों में पवित्र आत्मा को सहा यक (देखें यूहन्ना 14:16–27; मरोनी 8:26), एक शिक्षक (देखें यूहन्ना 14:26;
सि. और अनु. 50:14), और एक प्रकटकर्ता (देखें 2 नफी 32:5) कह गया है । पिता और पुत्र से प्रकटीकरण पवित्र आत्मा द्वारा व्यक्त किए जा ते हैं । वह पिता और पुत्र के लिए संदेशवाहक और गवाह है ।

|v20

पवित्र आत्मा पुरुषों और स्त्रियों को पवित्र आत्मा की शक्ति के रूप में और उपहार के रूप में प्रदान किया जाता है । यह शक्ति किसी व्यक्ति के ऊपर बपतिस्मा से पूर्व आ सकती है; यह प्रभावशाली गवाही देती है कि यीशु मसीह हमारा उद्धारकर्ता और मुक्तिदता है । पवित्र आत्मा की शक्ति के द्वारा, सच्चे जांचकर्ता उद्धारकर्ता के सुसमाचार, मॉरमन की पुस्तक की सच्चाई, पुनःस्थापना और जोसफ स्मिथ की भविष्यवक्ता की नियुक्ति की वास्तविकता का आश्वासन पा सकते हैं ।

|v21

पवित्र आत्मा का उपहार उचित और अधिकृत बपतिस्मे के बाद और मलकिसिदिक पौरोहित्य धारकों द्वारा हाथ रखे जाने से ही दिया जाता है । प्रभु ने घोषणा की थीः

|v22

‘‘हां, अपने पापों की क्षमा के लिए, तुम में से प्रत्येक, पश्चाताप करे और बपतिस्मा ले; हां, पानी के द्वारा बपतिस्मा लेना, और फिर आग और पवित्र आत्मा का बपतिस्मा । …

|v23

‘‘और जो कोई विश्वास करे उस पर हाथ रख कर, तुम मेरे गिरजाघर में पुष्टि करो, और मैं उनको पवित्र आत्मा का उपहार दूंगा’’ (सि. और अनु. 3 3:11, 15) ।

|v24

प्रेरित पौलुस ने इस प्रथा को इफिसियों को स्पष्ट किया था जब उसने कहा थाः

|v25

‘‘क्या तुमने विश्वास करते समय पवित्र आत्मा पाया ? उन्होंने उससे कहा, हमने तो पवित्र आत्मा की चर्चा भी नहीं सुनी ।

|v26

“And he said unto them, Unto what then were ye baptized? And they said, Unto John’s baptism.
‘‘उसने उनसे कहा, तो फिर तुम ने किसका बपतिस्मा लिया ? उन्होंने कहा, यूहन्ना का बपतिस्मा लिया ।

|v27

‘‘तब पौलुस ने कहा, यूहन्ना ने यह कह कर मन फिराव का बपतिस्मा दिया, कि जो मेरे बाद आने वाला है, उस पर अर्थात यीशु पर विश्वास करना

।

|v28

‘‘यह सुन कर उन्होंने प्रभु यीशु के नाम का बपतिस्मा लिया ।

|v29

‘‘और जब पौलुस ने उन पर हाथ रखे, तो उन पर पवित्र आत्मा उतरा’’ (प्रेरितों के काम 19:2–6) ।

|v30

डुबो कर बपतिस्मा ‘‘सुसमाचार की आंरभिक धर्मविधि है, और इसे पूर्ण होने के लिए इसके तुरन्त बाद आत्मा का बपतिस्मा होना चाहिए’’ (Bible Dictionary,
“Baptism”) । भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ ने समझाया था कि ‘‘पवित्र आत्मा पाने की तैयारी के लिए बपतिस्मा एक पवित्र धर्मविधि है; यह एक माध्यम और कुंजी होती है जिसके द्वारा पवित्र आत्मा संचालित होगी । हाथों को रख कर पवित्र आत्मा का उपहार, अन्य किसी भी सिद्धान्त के माध्यम द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सकता है सिवाय धर्मिकता के सिद्धान्त के’’ (*Teachings: Joseph Smith,* 95–96) ।

|v31

एक नये सदस्य की पुष्टिकरण की धर्मविधि और पवित्र आत्मा का उपहार देना, सरल और गहन दोनों हैं । योग्य मलकिसिदिक पौरोहित्य धारक अपने हाथों को योग्य व्यक्ति के सिर पर रखकर और उसे नाम लेकर बुलाते हैं । फिर, पवित्र पौरोहित्य के अधिकार और उद्धारकर्ता के नाम में, उस व्यक्ति की अन्तिम-दिनों के सन्तों का यीशु मसीह के गिरजाघर के सदस्य के रूप में पुष्टि की जाती है, और इस महत्वपूर्ण वाक्यांश को बोला जाता हैः ‘‘पवित्र आत्मा प्राप्त करो ।’’

|v32

इस धर्मविधि की सरलता के कारण हम इसके महत्व को नजरअंदाज कर सकते हैं । ये चार शब्द---‘‘पवित्र आत्मा प्राप्त करो’’--- कोई कर्महीन घोषणा नहीं होती है; अपितु, ये मिलकर एक पौरोहित्य आदेश बनाते हैं---कर्म करने के लिए एक आधिकारिक चेतावनी और न कि किसी के प्रभाव से कर्म करना (देखें 2
नफी 2:26) । हमारे सिर पर हाथों के रखने और ये चार महत्वपूर्ण शब्द बोलने के मात्र से पवित्र आत्मा हमारे जीवन में कार्य करना शुरू नहीं कर देता है । जैसे हम इस धर्मविधि को प्राप्त करते हैं, हम सभी चाहते, खोजते, कर्म करते, और इस प्रकार जीवन को जीते है कि हम वास्तव में ‘‘पवित्र आत्मा प्राप्त करो’’ और इसके सहायक आत्मिक उपहारों को प्राप्त करने के लिए, एक पवित्र और निरंतर जिम्मेदारी स्वीकार करते हैं । “किसी व्यक्ति को ऐसा उपहार से क्या लाभ यदि उसे उपहार तो दिया जाता है, और वह कोई उपहार प्राप्त नहीं करता है ? देखो, वह न तो उपहार पाने से आनन्दित होता है, और न ही उपहार देने वाले से” (देखें सि. और अनु. 88:33) ।

|v33

परमेश्वरत्व के तीसरे सदस्य की संगति पाने की आधिकारिक चेतावनी को निरंतर सच्चाई बनाने के लिए हमें क्या करना चाहिए ? मैं आपको सुझाव देता हूं कि हमें (1) पवित्र आत्मा पाने की सच्ची अभिलाषा, (2) अपने जीवन में उचित रूप में पवित्र आत्मा को निमंत्रित करना, और (3) विश्वसनीय रूप से परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना चाहिए ।

|v34

सच्ची अभिलाषा

|v35

पवित्र आत्मा की संगति के लिए हमें पहले इसकी लालसा, अभिलाषा, और इसे खोजने चाहिए । धार्मिक अभिलाषाओं के विषय में मॉरमन की पुस्तक में बताए गए स्वामी के विश्वसनीय शिष्यों से आप और मैं महान पाठ सीख सकते हैंः

|v36

''और बारह शिष्यों ने भीड़ को उपदेश दिया; और सुनो, उन्होंने उन्हें धरती पर घुटनों के बल झुकने को, और यीशु के नाम पर पिता से प्रार्थना करने को कहा । ...

|v37

''और उन्होंने उसके लिए प्रार्थना की जिसकी उन्हें सबसे अधिक इच्छा थी; और वे सबसे अधिक इच्छा पवित्र आत्मा पाने की करते थे'' (3 नफी 19 :6, 9) ।

|v38

क्या हम पवित्र आत्मा के लिए भी उतनी ही गंभीरता से और लगातार प्रार्थना करते हैं, जितनी कि हम अत्याधिक वांछित की वस्तु के लिए करते हैं ? या हम संसार के ध्यान में और प्रतिदिन की भाग-दौड़ से इसकी ओर आकर्षित नहीं होते और इसे इतना जरूरी नहीं समझते या इस अत्याधिक मूल्यवान उपहार की बिलकुल ही उपेक्षा करते हैं ? पवित्र आत्मा पाने की शुरूआत हमारे जीवन में इसकी संगति की हमारी सच्ची और निरंतर इच्छा से होती है ।

|v39

उचित निमंत्रण

|v40

हम अधिक सुगमता से प्रभु की आत्मा को पाते और पहचान जाते हैं जब हम उसे अपने जीवन में निमंत्रण देते हैं । हम पवित्र आत्मा को विवश, बाध्य , या आदेश नहीं दे सकते । बल्कि, हमें उसे अपने जीवन में उसी शालीनता और कोमलता से निमंत्रण देना चाहिए जैसे वह हम से याचना करता है ( देखें सि. और अनु. 42:14) ।

|v41

पवित्र आत्मा की संगति के लिए हमारे निमंत्रण कई तरीके से हो सकते हैंः अनुबन्ध बनाने और मानने के द्वारा; गंभीरता से व्यक्तिगत और पारिवारिक प्रार्थना करके; धर्मशास्त्रों को ध्यान से खोजकर; परिवार के सदस्यों और मित्रों से उचित संबंधों को मजबूत करके; उत्तम विचारों, कामों, और भाषा को अपना कर; और अपने घरों, पवित्र मन्दिर में, और गिरजे में आराधना करके । इसके विपरीत, अनुबन्ध और वचन के प्रति लापरवाह होने या तोड़ने, प्रार्थना और धर्मशास्त्र अध्ययन न करके, और अनुचित विचारों, कार्यो, और भाषा से आत्मा चली जाती है या हम से बिलकुल दूर रहती है ।

|v42

जैसे राजा बिन्यामीन ने अपने लोगों को सीखाया था, ''और अब, मेरे भाइयों मैं तुम से कहता हूं कि इन बातों का ज्ञान प्राप्त करने और शिक्षा मिलने के पश्चात अगर तुमने पाप किया और जो कुछ कहा गया है उसके विरूद्ध गए तो तुम प्रभु की आत्मा से अलग हो जाओगे और वह तुम्हारे अन्दर रह

कर तुम्हें विवेक के उस पथ पर चलने के लिए प्रदर्शित न कर सकेगा जिस पर चला कर तुम्हें आशीर्वाद, द्वारा समृद्ध और सुरक्षित रख सके'' (मुसाया ह 2:36)।

|v43

विश्वसनीयता से आज्ञा पालन करना

|v44

पवित्र आत्मा को पाने के लिए विश्वसनीयता से आज्ञा पालन करना जरूरी है। इस सच्चाई को हमें प्रत्येक सप्ताह याद कराए जाता है जब हम प्रभुभो ज की प्रार्थना को सुनते और रोटी और पानी को योग्यता से लेते हैं। जब हम यीशु मसीह का नाम ग्रहण करने की अपनी इच्छा, उसे हमेशा याद रख ने, और उसकी आज्ञाओं का पालन करने, की प्रतिज्ञा करते हैं, हम से वादा किया जाता है कि उसकी आत्मा हमारे साथ सदा रहेगी (देखें सि.और अनु . 20:77)। इस प्रकार, जो कुछ उद्धारकर्ता का सुसमाचार हमें करने और बनने के लिए सीखाता है उसका उद्देश्य हमें पवित्र आत्मा की संगति के स ाथ आशीषित करना है।

|v45

हमारी प्रार्थना करने और धर्मशास्त्र अध्ययन के कारणों पर विचार करें। हां, हम प्रार्थना में स्वर्गीय पिता से उसके पुत्र के नाम से बातचीत करने की इच्छा करते हैं। और हां, हम धर्मशास्त्रों में उपलब्ध प्रकाश और ज्ञान पाने की अभिलाषा करते हैं। लेकिन कृपया याद रखें कि ये पवित्र आदतें वे मुख्य तरीके हैं जिससे हम हमेशा स्वर्गीय पिता और उसके एकलौते पुत्र को हमेशा याद करते हैं और पवित्र आत्मा की निरंतर संगति के लिए जरूरी हैं।

|v46

प्रभु के घर और अपने सब्त की सभा में आराधना करने के कारणों पर विचार करें। हां, मन्दिर में हम अपने मृतक परिजनों की----और वार्ड और शाख ाओं में जहां हम रहते हैं अपने परिवारों और मित्रों की सेवा करते हैं। और हां, हम अपने भाइयों और बहनों के बीच मिलने वाली धार्मिक समाजिकता का आनन्द लेते हैं। लेकिन हम मुख्यरूप से पवित्र आत्मा की आशीषें पाने और उससे निर्देश लेने के लिए एकत्रित होते हैं।

|v47

प्रार्थना करना, अध्ययन करना, एकत्रित होना, आराधना करना, सेवा करना, और आज्ञा पालन करना सुसमाचार में करने वाली कामों की लम्बी सूची से अलग और स्वतंत्र काम नहीं हैं। बल्कि, ये प्रत्येक धार्मिक आदतें पवित्र आत्मा को पाने की अनुमति की प्रबल आत्मिक तलाश का एक महत्वपूर्ण तत्व है। परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन और गिरजे के मार्गदर्शकों की प्रेरणादायक सलाह का अनुसरण हम मुख्य रूप से पवित्र आत्मा की संगति पा ने पर केन्द्रीत होकर करते हैं। मूल रूप से, सभी सुसमाचार शिक्षाएं और गतिविधियां हमारे जीवन में पवित्र आत्मा को पाकर मसीह के निकट आने पर केन्द्रीत होती हैं।

|v48

आपको और मुझे मॉरमन की पुस्तक में बताए गये योद्धाओं जैसा बनने का प्रयास करना चाहिए, जिन्होंने ''आज्ञा के प्रत्येक शब्द पर ध्यान दिया और अच्छी तरह उनका पालन किया; हां, और उनके विश्वास के अनुसार ही उनसे व्यवहार किया जाता था। ...

|v49

''... और दिन प्रतिदिन वे अपने प्रभु परमेश्वर को स्मरण रखने में भी अडिग हैं-और उसकी व्यवस्था, न्याय और आज्ञाओं को लगातार मानते रहे हैं'' (अलमा 57:21; 58:40)।

|v50

गवाही

|v51

प्रभु ने घोषणा की है कि अन्तिम-दिनों के सन्तों के यीशु मसीह का गिरजाघर ही ''पूरी पृथ्वी में एकमात्र सच्चा और जीवित गिरजाघर है'' (सि. और अनु. 1:30)। यह पुनःस्थापित गिरजाघर सच्चा है क्योंकि यह उद्धारकर्ता का गिरजाघर है; वह ही ''मार्ग, सच्चाई, और जीवन है'' (यूहन्ना 14:6)। और पवित्र आत्मा के कामों और उपहारों के कारण यह एक जीवित गिरजाघर है। ऐसे समय में रहने के लिए हम कितने आशीषित हैं जब पृथ्वी पर पौरोहित्य है और जब हम पवित्र आत्मा प्राप्त कर सकते हैं ।

|v52

भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ के शहीद होने के कई साल बाद, वे अध्यक्ष ब्रिगहम यंग को दिखाई दिए और यह अनन्त सलाह दी थीः ''लोगों को विनम्र और विश्वसनीय होने को कहें और प्रभु की आत्मा को रखने को निश्चित [हों] और यह उनका सही मार्गदर्शन करेगी। धीमी, शान्त आवाज का ध्यान रखें और इसे अनसुना न करें; यह सीखाएगी [तुम्हें क्या] करना और कहां जाना है; यह राज्य के फलों की उपज देगी। भाइयों को उनके हृदयों को सलाह के लिए खुला रखने को कहो ताकि जब उन पर पवित्र आत्मा आए, उनके हृदय इसे पाने के लिए तैयार रहें। वे प्रभु की आत्मा को अन्य सभी आत्माओं में से पहचान सकते हैं। यह उनकी आत्मा में शान्ति और आनन्द फुसफुसाएगी, और यह दुर्भाव, द्वेष, शत्रुता, झगड़ा और सभी बुराइयों को उनके हृदयों से निकाल देगी; और उनकी संपूर्ण इच्छा अच्छा करने, धार्मिकता का विकास और परमेश्वर का राज्य का निमार्ण करने होगी। भाइयों से कहो यदि वे प्रभु की आत्मा का अनुसरण करेंगे वे सही मार्ग पर चलेंगे'' (*Teachings: Joseph Smith,* 98)।

|v53

मैं प्रार्थना करता हूं कि हम गंभीरता से और उचित रूप से पवित्र आत्मा को अपने दैनिक जीवन में निमंत्रित करेंगे। मैं यह भी प्रार्थना करता हूं हम विश्वसनीय रूप से परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करेंगे और वास्तविक्ता में पवित्र आत्मा प्राप्त करेगें। मैं वादा करता हूं कि भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ द्वारा ब्रिगहम यंग को बताई गई आशीषें उन सभी पर लागू होती और प्राप्त हो सकती है जो इस संदेश को सुनते या पढ़ते हैं।

|v54

मैं पिता और पुत्र की जीवित सच्चाई की गवाही देता हूं। मैं गवाही देता हूं कि पवित्र आत्मा एक प्रकटकर्ता, एक दिलासा देने वाला, और निर्णायक शिक्षक है जिससे हमें सीखना चाहिए। और मैं गवाही देता हूं कि पवित्र आत्मा की आशीषें और उपहार पुनःस्थापित, सच्चे, और इन अन्तिम दिनों में यीशु मसीह के जीवित गिरजाघर में कार्य करते हैं। मैं यह प्रमाण प्रभु यीशु मसीह के पवित्र नाम में देता हूं, आमीन।

|v55

लियाहोना

|v56

नवंबर 2010